संपादकीय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का निरंतर ह्रास दिखाई दे रहा है। हालाँकि यह सही है कि आस-पास व्याप्त उदासीनता के माहौल से विद्यालय भी प्रभावित हुए बिना रह नहीं पाए हैं और उनमें मूल्यों के प्रति अनादर या तटस्थता पैदा हुई है। फिर भी राष्ट्रीय मानस को निर्देशित करने के लिए उनकी महत्वपूर्ण भूमिका और दायित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। विद्यालयों को उन सार्वभौमिक शाश्वत मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए जो लोगों को एकता और एकीकरण की ओर उन्मुख करें और उन्हें इस काबिल बनाएँ कि वे अपने नैतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ अपने भीतर मौजूद शक्ति को महसूस कर सकें, समझ सकें। मूल्यपरक शिक्षा हमारे देश को कट्टरता, दुर्भावना, हिंसा, बेईमानी और शोषण जैसी बीमारियों से लड़ने में सहयोग देगी और व्यक्ति को एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने में मददगार साबित होगी।

भारतीय आधुनिक शिक्षा के इस अंक में मूल्यपरक शिक्षा से जुड़े चार लेख शामिल किए गए हैं। अनुज कुमार के लेख में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पर विश्लेषणात्मक टिप्पणी की गई है और बताया गया है कि मूल्यपरक शिक्षा द्वारा हम ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकते हैं जो श्रम, संस्कारों के द्वारा आत्मनिर्भर हो, निर्भय होकर भ्रष्टाचार और अकर्मण्यता के खिलाफ आवाज़ उठा सके, जातिवाद, वर्गभेद और सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर प्रजातांत्रिक समाज का निर्माण कर सके। विभा सिंह पटेल, रीटा अरोड़ा और श्वेता गुप्ता ने अपने लेखों के माध्यम से विभिन्न राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव मूल्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। केवलानंद कांडपाल का अनुभवपरक लेख खुलासा करता है कि बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्य उचित तरीके से विकसित नहीं किए जाते हैं। लेखक का मानना है कि मूल्य केवल नीतिवचन थोपने देने मात्र से ही विकसित नहीं होंगे, बल्कि शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ समानता का व्यवहार भी करना होगा और मूल्यों को अपने व्यवहार द्वारा प्रदर्शित भी करना होगा।

अंक के दो लेख उच्च शिक्षा से जुड़े हैं। बृजेश कुमार पांडेय ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आए बदलावों की समीक्षा की

है, तो पवन कुमार और पी.के.जोशी ने उत्तराखंड के संदर्भ में उच्च शिक्षा की मुख्य चुनौतियों और उनके समाधान की चर्चा भी की है।

दो लेख शैक्षिक प्रक्रिया में आई.सी.टी. के प्रयोग पर रोशनी डाल रहे हैं। रश्मि श्रीवास्तव ने आई.सी.टी. के विकास का उल्लेख करते हुए इनसे जुड़ी चुनौतियों का विश्लेषण किया है। अपर्णा पांडेय का लेख प्रभावशाली भौगोलिक शिक्षण की आई.सी.टी. आधारित एक नवीनतम तकनीक से संबंधित है जिसे एन.सी.ई.आर.टी. ने विकसित किया है।

दो लेख महान भारतीय दार्शनिक, चिंतक और शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों से रूबरू कराते हैं। दिनेश कुमार गुप्ता और साजिदा सादिक ने अपने लेख में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक चिंतन की व्याख्या की है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी वैसी ही बनी हुई है। प्रभात कुमार और आशीष श्रीवास्तव ने कृष्णमूर्ति तथा टैगोर के शैक्षिक विचारों के अनुरूप सही शिक्षक-छात्र अनुपात की महत्ता पर चर्चा की है। अभिषेक सौरभ अपने लेख के माध्यम से यह समझा रहे हैं कि हमारे देश में भाषा को धर्म से जोड़ने से क्या नुकसान हुआ है।

आज विद्यालयी पूर्व शिक्षा के महत्त्व को सभी स्वीकार कर रहे हैं। इसे किस प्रकार आयोजित किया जाए ताकि बच्चों की शैक्षिक बुनियाद मजबूत बन सके और वे विद्यालय जाने को तैयार हो सकें, ये मुद्दे बहुत महत्वपूर्ण हैं। रौमिला सोनी बता रही हैं कि गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा का आधार क्या होना चाहिए।

अकादमिक संपादकीय समिति